

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **AUGUST 17, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

1. पुनर्जागरण काल के दौरान यूरोपीय समाज के परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- मानवतावाद (humanism) के उद्भव ने शास्त्रीय ग्रीक और रोमन ग्रंथों के अध्ययन पर अधिक बल देने के लिए प्रोत्साहित किया।
- पुनर्जागरण ने पूरे यूरोप में धार्मिक सत्ता को तुरंत एक समान धर्मनिरपेक्ष विश्वदृष्टि (secular worldview) से प्रतिस्थापित कर दिया।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं
- कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं
- कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है
- कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है

उत्तर: (c)

व्याख्या: पुनर्जागरण कालीन मानवतावाद ने शास्त्रीय साहित्य, दर्शन और इतिहास के अध्ययन को प्रोत्साहित किया तथा मानवीय अभिकर्तृत्व (human agency), व्यक्तिगत क्षमताओं और सांसारिक चिंताओं पर अधिक बल दिया। हालांकि, इसने धर्म की तात्कालिक या एकसमान अस्वीकृति को जन्म नहीं दिया। पुनर्जागरणकालीन विचार अक्सर मजबूत ईसाई मान्यताओं के साथ सह-अस्तित्व में रहे। इसलिए, कथन 1 सही है, जबकि कथन 2 गलत है। महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक अंतर मानवतावाद और धर्मनिरपेक्षता के बीच है: पुनर्जागरण मानवतावाद ने बौद्धिक क्षितिज को व्यापक बनाया लेकिन केवल धार्मिक सत्ता को समाप्त नहीं किया।

2. निम्नलिखित में से कौन सा एक इस बात की सबसे अच्छी व्याख्या करता है कि एक कीस्टोन प्रजाति (keystone species) का संरक्षण कभी-कभी ऐसे पारिस्थितिक प्रभाव क्यों उत्पन्न कर सकता है जो स्वयं उस प्रजाति से कहीं आगे तक फैलते हैं?

- कीस्टोन प्रजातियां अनिवार्य रूप से किसी पारिस्थितिकी तंत्र में सबसे बड़ी आबादी का गठन करती हैं
- उनका पारिस्थितिक प्रभाव उनकी संख्यात्मक प्रचुरता की तुलना में असमान रूप से बड़ा हो सकता है
- कीस्टोन प्रजातियां केवल सबसे निचले पोषी स्तर (trophic level) पर कब्जा करती हैं और इसलिए प्राथमिक उत्पादकता को नियंत्रित करती हैं
- उनका संरक्षण आवास की स्थितियों की परवाह किए बिना प्रजातियों की समृद्धि को अनिवार्य रूप से बढ़ाता है

उत्तर: (b)

व्याख्या: एक कीस्टोन प्रजाति का पारिस्थितिक प्रभाव उसकी प्रचुरता (संख्या) के आधार पर मिलने वाले अनुमान की तुलना में असमान रूप से अधिक होता है। इसे हटाने या इसमें गिरावट आने से ट्रॉफिक कैस्केड (trophic cascades)

शुरू हो सकते हैं, सामुदायिक संरचना बदल सकती है और आवास की स्थितियां प्रभावित हो सकती हैं। एक कीस्टोन प्रजाति का सबसे प्रचुर प्रजाति होना या किसी विशेष पोषी स्तर पर कब्जा करना आवश्यक नहीं है। इसलिए, ऐसी प्रजातियों का संरक्षण संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को लाभ पहुंचा सकता है, लेकिन इसका परिणाम पारिस्थितिक संबंधों और आवास की स्थितियों पर निर्भर करता है।

3. आर्थिक वृद्धि और संरचनात्मक परिवर्तन के बीच संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कम उत्पादकता वाले कृषि क्षेत्र से उच्च उत्पादकता वाले विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों की ओर श्रम का निरंतर बदलाव उत्पादकता वृद्धि में योगदान दे सकता है।
2. राष्ट्रीय आय में सेवाओं के हिस्से में वृद्धि अनिवार्य रूप से यह दर्शाती है कि एक अर्थव्यवस्था ने अपना संरचनात्मक परिवर्तन पूरा कर लिया है।
3. संरचनात्मक परिवर्तन क्षेत्रों के बीच श्रमिकों की आनुपातिक आवाजाही के बिना भी हो सकता है, जब उत्पादकता अंतर क्षेत्रों के भीतर ही उत्पन्न होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं। संरचनात्मक परिवर्तन में उत्पादन, रोजगार और उत्पादकता की क्षेत्रीय संरचना में बदलाव शामिल है। कम उत्पादकता वाले कृषि क्षेत्र से अधिक उत्पादक क्षेत्रों में श्रम की आवाजाही समग्र उत्पादकता को बढ़ा सकती है। हालांकि, कथन 2 गलत है क्योंकि केवल सेवाओं का बड़ा हिस्सा संरचनात्मक परिवर्तन के पूरा होने को साबित नहीं करता है; सेवाओं की प्रकृति और उत्पादकता, रोजगार के पैटर्न और अंतर-क्षेत्रीय उत्पादकता अंतराल भी मायने रखते हैं। इसके अलावा, मौजूदा क्षेत्रों के भीतर उत्पादकता में सुधार समकक्ष श्रम आवाजाही के बिना भी परिवर्तन में योगदान दे सकते हैं।

4. संसदीय प्रणाली में मंत्रिपरिषद की संवैधानिक स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रपति सामान्यतः प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्यकारी शक्ति का प्रयोग करता है।
2. मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।
3. प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है, जबकि अन्य मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री की सलाह पर की जाती है।
4. संविधान के अनुसार मंत्रिपरिषद के प्रत्येक निर्णय को लागू करने से पहले लोकसभा द्वारा व्यक्तिगत रूप से अनुमोदित किया जाना आवश्यक है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन 1, 2 और 3 सही हैं। अनुच्छेद 74 के तहत, राष्ट्रपति संवैधानिक ढांचे के अधीन, प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली मंत्रिपरिषद् की सहायता और सलाह पर कार्य करता है। अनुच्छेद 75 के तहत, प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री की सलाह पर की जाती है। मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है। कथन 4 गलत है क्योंकि संसदीय सरकार के लिए यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक कार्यकारी निर्णय को लोकसभा से पूर्व व्यक्तिगत अनुमोदन प्राप्त हो। विधायिका प्रश्नों, बहसों, वित्तीय नियंत्रण, प्रस्तावों और अंततः विश्वास संबंधों जैसे तंत्रों के माध्यम से नियंत्रण रखती है।

5. निम्नलिखित अभिकथन (Assertion) और कारणों (Reasons) पर विचार कीजिए:

अभिकथन (A): किसी नदी के जल निकासी पैटर्न (drainage pattern) का अनुमान हमेशा केवल उस क्षेत्र के वर्तमान सतह के उच्चावच (surface relief) से नहीं लगाया जा सकता है।

कारण 1: कुछ नदियाँ अपने पहले के मार्गों को तब भी बनाए रख सकती हैं जब बाद के भूगर्भीय या विवर्तनिक (tectonic) परिवर्तन आसपास के उच्चावच को बदल देते हैं।

कारण 2: किसी क्षेत्र का वर्तमान जल निकासी नेटवर्क भूगर्भीय संरचना, चट्टान प्रतिरोध, विवर्तनिक गतिविधियों और परिदृश्य के ऐतिहासिक विकास के संयुक्त प्रभाव को दर्शा सकता है।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

- (a) अभिकथन और कारण 1 दोनों सही हैं, और कारण 1 अभिकथन की सही व्याख्या है; कारण 2 भी सही है
- (b) अभिकथन और कारण 1 दोनों सही हैं, लेकिन कारण 1 अभिकथन की सही व्याख्या नहीं है; कारण 2 गलत है
- (c) अभिकथन सही है, लेकिन कारण 1 और कारण 2 दोनों गलत हैं
- (d) अभिकथन गलत है, लेकिन कारण 1 और कारण 2 दोनों सही हैं

उत्तर: (a)

व्याख्या: अभिकथन सही है क्योंकि जल निकासी का विकास एक ऐतिहासिक और भूगर्भीय प्रक्रिया है, और वर्तमान उच्चावच अकेले मौजूदा नदी मार्ग की व्याख्या नहीं कर सकता है। कारण 1 पूर्ववर्ती जल निकासी (antecedent drainage) की अवधारणा के माध्यम से इसकी सही व्याख्या करता है, जहाँ एक नदी भूमि के उत्थान या विरूपण के बावजूद अपने मार्ग को बनाए रखती है। कारण 2 भी सही है क्योंकि जल निकासी पैटर्न भूगर्भीय संरचना, शैलविज्ञान (lithology), विवर्तनिकी और परिदृश्य के विकास से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार, दोनों कारण अभिकथन का समर्थन करते हैं, जिसमें कारण 1 अधिक प्रत्यक्ष व्याख्या प्रदान करता है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

1. हाल ही में खबरों में रही ग्लो झील (Glaw Lake) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- यह अरुणाचल प्रदेश के कमलांग वन्यजीव अभयारण्य/टाइगर रिजर्व परिसर के भीतर स्थित है और लोहित नदी की सहायक नदियों के जलग्रहण क्षेत्र से जुड़ी हुई है।
- रामसर स्थल के रूप में इसकी मान्यता इसे अरुणाचल प्रदेश का पहला रामसर-निर्दिष्ट आर्द्रभूमि (wetland) बनाती है।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है
- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है
- कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है
- कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है

उत्तर: (b)

व्याख्या: दोनों कथन सही हैं। ग्लो झील अरुणाचल प्रदेश के कमलांग परिसर में स्थित है और कमलांग, लेंग तथा लाटी नदी प्रणालियों से जुड़ी है, जो लोहित की सहायक नदियाँ हैं। इसके हालिया रामसर पदनाम ने इसे भारत का 101वां रामसर स्थल और अरुणाचल प्रदेश का पहला रामसर स्थल बना दिया है। हालांकि, कथन 2 कथन 1 में उल्लिखित भौगोलिक स्थिति या जलवैज्ञानिक जुड़ाव की व्याख्या नहीं करता है। वैचारिक भ्रम किसी आर्द्रभूमि की रामसर स्थिति को उसके नदी-बेसिन स्थान के साथ मिलाने से उत्पन्न होता है।

2. ई-प्रत्यारोपण (e-Pratyaropan) डिजिटल प्लेटफॉर्म के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा इसके विशिष्ट महत्व को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है?

- यह मुख्य रूप से स्वैच्छिक अंगदाताओं को पंजीकृत करने के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है और अंग आवंटन में भाग नहीं लेता है।
- यह अंग और उक्तक प्रत्यारोपण के लिए एक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करता है, जिसमें अंग आवंटन के लिए एक स्वचालित, नियम-आधारित तंत्र शामिल है।

(c) यह विशेष रूप से मृत अंगदाताओं की पहचान सत्यापित करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक आधार-आधारित प्लेटफॉर्म है।

(d) यह सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के तहत अंग प्रत्यारोपण करने वाले अस्पतालों को प्रतिपूर्ति करने के लिए एक वित्तीय प्लेटफॉर्म है।

उत्तर: (b)

व्याख्या: ई-प्रत्यारोपण राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (NOTTO) से जुड़ा एक राष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्म है। इसका महत्व प्रत्यारोपण पारिस्थितिकी तंत्र को डिजिटाइज़ एवं एकीकृत करने और चिकित्सा मानदंडों व तत्परता जैसे कारकों के आधार पर एक पारदर्शी, नियम-आधारित अंग-आवंटन प्रक्रिया का समर्थन करने में निहित है। इस प्रकार, यह केवल दाता पंजीकरण या पहचान सत्यापन की तुलना में काफी व्यापक है।

3. उत्कलमणि पंडित गोपबंधु दास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उनके सार्वजनिक कार्य ने राष्ट्रवाद को समाज सेवा, शिक्षा और उड़िया पहचान की उन्नति के साथ जोड़ा।
2. उन्होंने 1919 में एक साप्ताहिक प्रकाशन के रूप में 'द समाज' (The Samaja) की स्थापना की, जो बाद में सर्वेंट्स ऑफ द पीपल सोसाइटी (Servants of the People Society) से जुड़ गया।
3. उनका राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण मुख्य रूप से ओडिशा के भाषाई पुनर्गठन तक ही सीमित था और इसका विस्तार व्यापक भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन तक नहीं हुआ।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं। गोपबंधु दास एक स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद, कवि और समाज सुधारक थे, जिन्होंने क्षेत्रीय सांस्कृतिक चेतना को भारतीय राष्ट्रवाद के साथ जोड़ा। उन्होंने 1919 में एक साप्ताहिक के रूप में 'द समाज' की शुरुआत की और बाद में इसे सर्वेंट्स ऑफ द पीपल सोसाइटी से जोड़ा। कथन 3 गलत है क्योंकि उनकी गतिविधियाँ क्षेत्रीय पहचान से काफी आगे तक फैली हुई थीं: उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया, शिक्षा और समाज सुधार को बढ़ावा दिया और लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित सर्वेंट्स ऑफ द पीपल सोसाइटी से जुड़े थे। इसलिए उनकी विरासत क्षेत्रीय सांस्कृतिक दावेदारी और व्यापक भारतीय राष्ट्रवाद के सह-अस्तित्व को दर्शाती है।

4. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास (संशोधन) विधेयक, 2026 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह निवेश और टर्नओवर मानदंडों के माध्यम से एमएसएमई (MSME) वर्गीकरण निर्धारित करने में केंद्र सरकार को अधिक लचीलापन प्रदान करने का प्रयास करता है।

2. यह ट्रेड रिसीवेबल्स डिस्काउंटिंग सिस्टम (TReDS) के माध्यम से केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (CPSEs) द्वारा एमएसएमई के चालान (invoices) के अनिवार्य निपटान का प्रस्ताव करता है।
3. यह सूक्ष्म और लघु उद्यमों से जुड़े विवादों में मध्यस्थता और अधिनिर्णय (arbitration) के लिए निर्दिष्ट समय-सीमा पेश करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। यह विधेयक पूर्ववर्ती कठोर वैधानिक सीमाओं को एक ऐसे ढांचे से बदलने का प्रयास करता है जो केंद्र सरकार को संयंत्र और मशीनरी/उपकरण में निवेश तथा टर्नओवर के आधार पर एमएसएमई वर्गीकरण निर्दिष्ट करने की अनुमति देता है। इसके लिए CPSEs को TReDS के माध्यम से MSME खरीद चालान का निपटान करने की भी आवश्यकता होती है, जो RBI द्वारा विनियमित एक इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म है जो व्यापार प्राप्तियों के वित्तपोषण को सक्षम बनाता है। इसके अलावा, यह मध्यस्थता और अधिनिर्णय के लिए समय-सीमा पेश करता है, जिसमें पहली उपस्थिति से 90 दिनों के भीतर मध्यस्थता पूरा करना और बाद की अधिनिर्णय कार्यवाहियों के लिए निर्दिष्ट समय-सीमा शामिल है।

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पूरी रथ यात्रा के लिए प्रस्तावित यूनेस्को मान्यता विश्व धरोहर सूची के बजाय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची (Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity) से संबंधित है।
2. विशेष कारीगरों के वंशानुगत समूहों द्वारा प्रतिवर्ष तीन रथों का निर्माण उत्सव से जुड़ी जीवंत सांस्कृतिक प्रथाओं का हिस्सा है।
3. भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की राष्ट्रीय सूची में शामिल होना यूनेस्को की प्रतिनिधि सूची में नामांकन प्राप्त करने की प्रक्रिया से संबंधित है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। यह प्रस्ताव यूनेस्को के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत ढांचे से संबंधित है, न कि विश्व धरोहर सूची से, जो मुख्य रूप से सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थलों से संबंधित है। पूरी रथ यात्रा में अनुष्ठानिक प्रथाओं, संगीत, शिल्प कौशल और तीन रथों के वार्षिक निर्माण सहित जीवंत परंपराएं शामिल हैं। संगीत नाटक अकादमी भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की राष्ट्रीय सूची का रखरखाव करती है, और इस राष्ट्रीय सूची में शामिल होना यूनेस्को की प्रतिनिधि सूची के लिए नामांकन प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण शर्त है।

6. नाउरू गणराज्य (पूर्व में नाओरो) की निम्नलिखित भौगोलिक विशेषताओं पर विचार कीजिए:

1. यह भूमध्य रेखा के लगभग 42 किमी दक्षिण में स्थित एक प्रशांत द्वीप गणराज्य है।
2. यह ओशिनिया के माइक्रोनेशियन क्षेत्र से संबंधित है।
3. यह बिना किसी बाहरी द्वीप वाला एकल-द्वीप राज्य है।
4. इसका अर्थशास्त्र ऐतिहासिक रूप से फॉस्फेट संसाधनों के आसपास विकसित हुआ था।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (d)

व्याख्या: चारों कथन सही हैं। नाउरू माइक्रोनेशिया में एक बहुत छोटा प्रशांत द्वीप गणराज्य है, जो भूमध्य रेखा से लगभग 42 किमी दक्षिण में स्थित है। इसमें एक मुख्य द्वीप शामिल है और इसका कोई बाहरी द्वीप नहीं है। इसकी अर्थव्यवस्था ऐतिहासिक रूप से फॉस्फेट खनन पर अत्यधिक निर्भर थी, हालांकि उच्च श्रेणी के फॉस्फेट भंडार के समाप्त होने ने देश को मत्स्य पालन से संबंधित आय और सेवाओं सहित अन्य राजस्व स्रोतों की ओर धकेल दिया है। देश के आधिकारिक नाम के रूप में नाउरू गणराज्य का हालिया अपनापन इस मानचित्र-आधारित विषय में एक समकालीन भू-राजनीतिक और सांस्कृतिक आयाम जोड़ता है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

1. सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-I | एनसीईआरटी कक्षा XII – भारत: लोग और अर्थव्यवस्था | अध्याय 12: चयनित मुद्दों और समस्याओं पर भौगोलिक परिप्रेक्ष्य

प्रश्न 1. "भारत में पर्यावरणीय समस्याएं तेजी से मानव भूगोल की समस्याएं बनती जा रही हैं, क्योंकि उनके कारण और परिणाम जनसंख्या, बस्ती, प्रवास और आर्थिक गतिविधियों के पैटर्न से गहराई से जुड़े हुए हैं।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

नमूना उत्तर: भारत में पर्यावरणीय क्षरण को केवल एक भौतिक या पारिस्थितिक घटना के रूप में नहीं समझा जा सकता है। यह जनसंख्या के स्थानिक वितरण, शहरीकरण, औद्योगीकरण, प्रवास, उपभोग के पैटर्न और संसाधनों तक पहुँच में असमानताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार, पर्यावरणीय मुद्दे तेजी से एक मानव-भौगोलिक चुनौती बनते जा रहे हैं।

चयनित भौगोलिक मुद्दों पर एनसीईआरटी (NCERT) का ढांचा जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि क्षरण, शहरी कचरा निपटान, ग्रामीण-शहरी प्रवास और झुगियों को परस्पर जुड़ी समस्याओं के रूप में रेखांकित करता है। शहरों में तेजी से जनसंख्या का संकेंद्रण आवास, परिवहन, जल और स्वच्छता की मांग को बढ़ाता है। जहाँ बुनियादी ढांचे का आनुपातिक रूप से विस्तार नहीं हो पाता, वहाँ पर्यावरणीय तनाव अनिवार्य हो जाता है।

जल प्रदूषण इस अंतःक्रिया का उदाहरण देता है। औद्योगिक क्लस्टर, शहरी सीवेज और कृषि अपवाह अक्सर नदियों और भूजल को दूषित करते हैं। बड़े शहरी-औद्योगिक केंद्रों के निचले प्रवाह (downstream) में यह समस्या विशेष रूप से गंभीर है। इसलिए प्रदूषण केवल प्राकृतिक प्रक्रियाओं को ही नहीं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों और बस्तियों के स्थानिक संकेंद्रण को भी दर्शाता है।

इसी तरह, शहरी कचरा निपटान एक प्रमुख चुनौती बन गया है क्योंकि विस्तार करते शहर भारी मात्रा में नगरपालिका और औद्योगिक कचरा उत्पन्न करते हैं। अपर्याप्त पृथक्करण (segregation), उपचार और वैज्ञानिक निपटान मिट्टी और भूजल को दूषित कर सकता है और सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकता है।

प्रवास और झुग्गी-झोपड़ियों का निर्माण (slum formation) इस संबंध को और उजागर करता है। ग्रामीण-शहरी प्रवास ग्रामीण धक्का कारकों (push factors) और शहरी खिंचाव कारकों (pull factors) दोनों द्वारा संचालित होता है। प्रवासी अक्सर अनौपचारिक रोजगार में प्रवेश करते हैं लेकिन उन्हें किफायती आवास और बुनियादी सेवाओं की कमी का सामना करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील स्थानों में अनौपचारिक बस्तियाँ उभर सकती हैं, जहाँ अपर्याप्त स्वच्छता, जल निकासी और कचरा निपटान स्वास्थ्य और पारिस्थितिक जोखिमों को तीव्र कर देता है।

भूमि क्षरण भी मानवीय आवश्यकताओं और संसाधन दबाव के बीच अंतःक्रिया को दर्शाता है। वनों की कटाई, खनन, अत्यधिक सिंचाई, अतिचारण (overgrazing) और अनुपयुक्त कृषि पद्धतियाँ भूमि की उत्पादकता को कम कर सकती हैं। जलवायु परिवर्तनशीलता इन दबावों को बढ़ा सकती है लेकिन यह हमेशा प्राथमिक कारण नहीं होती है।

इसलिए इसका समाधान एक एकीकृत भौगोलिक दृष्टिकोण की मांग करता है: सघन और नियोजित शहरीकरण, चक्रीय अर्थव्यवस्था (circular economy) के सिद्धांत, अपशिष्ट जल उपचार, विकेंद्रीकृत कचरा प्रबंधन, टिकाऊ कृषि, जलग्रहण प्रबंधन (watershed management), सार्वजनिक परिवहन और सहभागी नियोजन।

उदाहरण के लिए, नशा मुक्त युवा अभियान यह भी दर्शाता है कि सामाजिक भूगोल और सार्वजनिक स्वास्थ्य कैसे आपस में जुड़ते हैं: संवेदनशीलता (vulnerability) पड़ोस, प्रवास, रोजगार के अवसरों, सामाजिक नेटवर्क और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच द्वारा आकार लेती है।

निष्कर्ष: पर्यावरणीय स्थिरता के लिए क्षेत्र-विशिष्ट (sector-specific) हस्तक्षेपों से स्थान-आधारित (place-based) और जन-केंद्रित नियोजन की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। भारत को ऐसी विकास रणनीतियों की आवश्यकता है जो यह स्वीकार करें कि पारिस्थितिक क्षरण और सामाजिक संवेदनशीलता अक्सर एक ही भौगोलिक स्थान पर विद्यमान होते हैं।

यूपीएससी मूल्य संवर्धन (UPSC Value Addition):

एसडीजी 6 (SDG 6), एसडीजी 11 (SDG 11), एसडीजी 12 (SDG 12) और एसडीजी 13 (SDG 13), शहरी लचीलापन (urban resilience), पर्यावरणीय न्याय और टिकाऊ मानव बस्तियों की अवधारणा के साथ जुड़ाव।

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-II | एनसीईआरटी कक्षा XII – स्वतंत्र भारत में राजनीति | अध्याय 13: भारतीय राजनीति में हालिया बदलाव

प्रश्न 2. "गठबंधन और क्षेत्रीय राजनीति के विकास ने एक साथ भारत के संघीय चरित्र को मजबूत किया है और राष्ट्रीय नीति-निर्माण को जटिल बनाया है।" परीक्षण कीजिए।

नमूना उत्तर: बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के बाद से भारतीय राजनीति ने लंबे समय से चले आ रहे एक-दल के प्रभुत्व से अधिक प्रतिस्पर्धी राजनीतिक व्यवस्था की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा, जिसकी विशेषता गठबंधन सरकारें, क्षेत्रीय दल और सामाजिक व भौगोलिक रूप से विविध समूहों की अधिक राजनीतिक लामबंदी (mobilisation) रही है। इस बदलाव का भारतीय संघवाद पर दोहरा प्रभाव पड़ा है।

क्षेत्रीय दलों के उदय ने राज्य-विशिष्ट चिंताओं को राष्ट्रीय नीति-निर्माण में लाकर संघवाद को मजबूत किया। भाषा, क्षेत्रीय विकास, राजकोषीय हस्तांतरण, विशेष सहायता, संसाधन आवंटन और राज्य स्वायत्तता जैसे मुद्दों को अधिक राजनीतिक दृश्यता मिली। क्षेत्रीय दलों ने स्थानीय आकांक्षाओं और संघ सरकार के बीच महत्वपूर्ण मध्यस्थों के रूप में भी कार्य किया।

गठबंधन राजनीति ने बातचीत और आम सहमति बनाने के लिए प्रोत्साहन उत्पन्न किए। चूंकि सरकारें अक्सर कई राजनीतिक गठबंधनों के समर्थन पर निर्भर होती थीं, इसलिए एकतरफा नीति-निर्माण अपेक्षाकृत कठिन हो गया। इसने राज्यों और क्षेत्रीय राजनीतिक अभिनेताओं के साथ परामर्श को प्रोत्साहित किया। इस अर्थ में, गठबंधन राजनीति ने राष्ट्रीय शासन के तथाकथित राजनीतिक संघीकरण (political federalisation) में योगदान दिया।

हालांकि, गठबंधन राजनीति ने जटिलताएं भी पैदा कीं। विविध सहयोगियों पर निर्भर सरकारों को नीतिगत निरंतरता बनाए रखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था। राष्ट्रीय प्राथमिकताओं पर कभी-कभी क्षेत्रीय हित हावी हो सकते थे। मंत्रालीय विभागों (ministerial portfolios), वित्तीय सहायता या विकास परियोजनाओं पर राजनीतिक सौदेबाजी असमान व्यवहार की धारणाएं बना सकती थी।

इसके बावजूद, क्षेत्रीय राजनीति के विकास ने यह प्रदर्शित किया है कि भारतीय संघवाद केवल एक संवैधानिक व्यवस्था नहीं है बल्कि एक राजनीतिक प्रक्रिया भी है। एक-दल बहुमत वाली सरकारों के दौर में भी, क्षेत्रीय दलों की चुनावी ताकत राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करती रहती है क्योंकि राज्य राजनीतिक लामबंदी के महत्वपूर्ण क्षेत्र बने रहते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम वंचितों (subaltern) और पहचान-आधारित राजनीतिक लामबंदी का उदय है। अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC), दलितों और क्षेत्रीय सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले दलों के उद्भव ने राजनीतिक भागीदारी का विस्तार किया और अभिजात वर्ग के प्रभुत्व वाली राजनीति के पहले के पैटर्न को चुनौती दी। हालांकि, पहचान लामबंदी तब समस्याग्रस्त हो सकती है जब चुनावी प्रतिस्पर्धा मौलिक विकास को बढ़ावा देने के बजाय सामाजिक विखंडन (social fragmentation) को सुदृढ़ करती है।

इसलिए, चुनौती क्षेत्रीय राजनीतिक आकांक्षाओं को समाप्त करने की नहीं है, बल्कि उन्हें सहकारी संघीय तंत्रों के भीतर संस्थागत बनाने की है। जीएसटी परिषद (GST Council), अंतर-राज्यीय परिषद (Inter-State Council), क्षेत्रीय परिषदें (Zonal Councils) और नीति आयोग के सहकारी संघवाद के तंत्र बातचीत के लिए संरचित मंच प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष: क्षेत्रीय और गठबंधन राजनीति ने भारतीय लोकतंत्र को इसकी सामाजिक और भौगोलिक विविधता का अधिक प्रतिनिधि बना दिया है। इसका उद्देश्य राजनीतिक सौदेबाजी को संस्थागत सहकारी संघवाद में परिवर्तित करना होना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि क्षेत्रीय आकांक्षाएं राष्ट्रीय एकीकरण को कमजोर करने के बजाय मजबूत करें।

आगे का रास्ता (Way Forward):

राजकोषीय संघवाद, संस्थागत परामर्श, पारदर्शी अंतर-सरकारी हस्तांतरण, नीति-निर्माण में राज्यों की भागीदारी और केंद्र-राज्य विवादों को सुलझाने के तंत्र को मजबूत करना।

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-III | एनसीईआरटी कक्षा XII – रसायन विज्ञान, भाग II | अध्याय 13: एमीन (Amines)

प्रश्न 3. "मनोप्रभावी पदार्थों (psychoactive substances) का रसायन विज्ञान यह दर्शाता है कि नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ लड़ाई में वैज्ञानिक समझ और प्रभावी सार्वजनिक नीति दोनों की आवश्यकता क्यों है।" मादक द्रव्यों के सेवन से निपटने में रसायन विज्ञान के महत्व पर चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर: नशीली दवाओं के दुरुपयोग पर आमतौर पर सामाजिक, स्वास्थ्य या कानून-व्यवस्था के मुद्दे के रूप में चर्चा की जाती है, लेकिन इसका एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और तकनीकी आयाम भी है। रोकथाम, उपचार, फॉरेंसिक जांच और प्रभावी विनियमन के लिए मनोप्रभावी पदार्थों की रासायनिक संरचना, जैविक गतिविधि, चयापचय (metabolism) और पहचान को समझना आवश्यक है।

एमीन (amines) का एनसीईआरटी अध्ययन एक मूलभूत समझ प्रदान करता है क्योंकि नाइट्रोजन-युक्त कार्यात्मक समूह (functional groups) कई फार्मास्यूटिकल्स और प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले यौगिकों सहित जैविक रूप से सक्रिय यौगिकों में व्यापक रूप से पाए जाते हैं। कार्यात्मक समूहों की उपस्थिति और व्यवस्था विलेयता (solubility), प्रतिक्रियाशीलता (reactivity), जैविक अंतःक्रिया और चयापचय जैसे गुणों को प्रभावित करती है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से, मनोप्रभावी पदार्थ तंत्रिका तंत्र में रिसेप्टर्स और जैव रासायनिक मार्गों के साथ अंतःक्रिया करते हैं। बार-बार संपर्क से सहनशीलता (tolerance), निर्भरता और वापसी के लक्षण (withdrawal symptoms) उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए, व्यसन (addiction) को केवल व्यक्तिगत नैतिकता के प्रश्न के रूप में नहीं देखा जा सकता है; इसमें न्यूरोबायोलॉजी, व्यवहार संबंधी अनुकूलन (behavioural conditioning) और सामाजिक निर्धारक शामिल हैं।

रसायन विज्ञान फॉरेंसिक विज्ञान का भी केंद्र बिंदु है। आधुनिक विश्लेषणात्मक तकनीकें जैविक नमूनों और जल्ल की गई सामग्रियों में नियंत्रित पदार्थों की पहचान कर सकती हैं। क्रोमैटोग्राफी (chromatography) और मास स्पेक्ट्रोमेट्री (mass spectrometry) जैसी तकनीकें प्रयोगशालाओं को समान भौतिक बनावट लेकिन विभिन्न रासायनिक संरचना वाले पदार्थों के बीच अंतर करने में सक्षम बनाती हैं। यह साक्ष्य-आधारित प्रवर्तन (evidence-based enforcement) को मजबूत करता है।

एक अन्य चुनौती नए मनोप्रभावी पदार्थों (NPS) का उद्भव है, जो मौजूदा पदार्थों के रासायनिक रूप से संशोधित संस्करण हो सकते हैं। उनकी तेजी से उपस्थिति नियामक अंतर पैदा कर सकती है क्योंकि पारंपरिक कानूनी अनुसूचियां (legal schedules) तुरंत हर नए संश्लेषित यौगिक को शामिल नहीं कर सकती हैं। इसलिए, नियामक प्रणालियों को पहचान और जोखिम मूल्यांकन के लिए वैज्ञानिक क्षमता की आवश्यकता होती है।

हाल ही में शुरू किया गया 'विकसित भारत संकल्प अभियान के लिए नशा मुक्त युवा' इस वैज्ञानिक चुनौती में मांग-कटौती (demand-reduction) का आयाम जोड़ता है। यह अभियान व्यसन को विशुद्ध रूप से आपराधिक मुद्दा मानने के बजाय रोकथाम, युवा जुड़ाव, खुले संचार और उपचार पर जोर देता है।

इसलिए एक व्यापक रणनीति में वैज्ञानिक निगरानी, फोरेंसिक क्षमता, दवा विनियमन, स्कूल-आधारित रोकथाम, परामर्श, पुनर्वास और तस्करी के खिलाफ प्रवर्तन को जोड़ा जाना चाहिए। अनुसंधान संस्थानों, चिकित्सा पेशेवरों, फोरेंसिक प्रयोगशालाओं और कानून-प्रवर्तन एजेंसियों को मिलकर काम करना चाहिए।

निष्कर्ष: रसायन विज्ञान पदार्थों की पहचान करने और उन्हें समझने के उपकरण प्रदान करता है, लेकिन केवल विज्ञान ही व्यसन का समाधान नहीं कर सकता है। सबसे प्रभावी रणनीति वैज्ञानिक साक्ष्य को सार्वजनिक स्वास्थ्य, व्यवहार संबंधी हस्तक्षेपों, पुनर्वास और आनुपातिक प्रवर्तन के साथ जोड़ती है।

आगे का रास्ता (Way Forward):

उन्नत विष विज्ञान (toxicology) प्रयोगशालाएं विकसित करना, फोरेंसिक नेटवर्क को मजबूत करना, उभरते पदार्थों की निगरानी करना, व्यसन-उपचार क्षमता में सुधार करना और युवाओं के बीच वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ावा देना।

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-IV | नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

प्रश्न 4. एक जिला मजिस्ट्रेट को पता चलता है कि आर्थिक रूप से संवेदनशील समुदायों में बड़ी संख्या में युवा मादक द्रव्यों के सेवन से तेजी से प्रभावित हो रहे हैं। स्थानीय राजनीतिक प्रतिनिधि तत्काल पुलिस कार्रवाई की मांग करते हैं, जबकि स्वास्थ्य अधिकारियों का तर्क है कि अत्यधिक अपराधीकरण प्रभावित व्यक्तियों को इलाज कराने से हतोत्साहित कर सकता है। जिला मजिस्ट्रेट के रूप में, आप इस नैतिक दुविधा को कैसे हल करेंगे? इसमें शामिल मूल्यों और आपके द्वारा अपनाई जाने वाली कार्ययोजना पर चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर: यह स्थिति सार्वजनिक व्यवस्था, व्यक्तिगत कल्याण, अनुकंपा (compassion), जवाबदेही और प्रशासनिक प्रभावशीलता के बीच संघर्ष प्रस्तुत करती है। मादक द्रव्यों का सेवन अपराध और सामाजिक विकार उत्पन्न कर सकता है, लेकिन व्यसन स्वयं भी एक स्वास्थ्य स्थिति हो सकती है जिसके लिए उपचार की आवश्यकता होती है। इसलिए, एक नैतिक रूप से सुदृढ़ प्रतिक्रिया को अत्यधिक अपराधीकरण और प्रशासनिक निष्क्रियता दोनों से बचना चाहिए।

इसमें शामिल प्राथमिक मूल्य अनुकंपा, सहानुभूति, न्याय, निष्पक्षता, उत्तरदायित्व, सार्वजनिक हित, कानून का शासन और मानवीय गरिमा हैं।

पहला सिद्धांत उपचार की आवश्यकता वाले उपयोगकर्ताओं और वाणिज्यिक आपूर्ति में शामिल संगठित तस्करों के बीच अंतर करना होगा। तस्करों को सख्त कानूनी कार्रवाई का सामना करना चाहिए क्योंकि उनकी गतिविधियाँ संवेदनशील आबादी का शोषण करती हैं और सार्वजनिक स्वास्थ्य को खतरे में डालती हैं। इसके साथ ही, निर्भरता से पीड़ित व्यक्तियों की परामर्श, चिकित्सा देखभाल और पुनर्वास तक पहुँच होनी चाहिए।

मेरा पहला कदम स्वास्थ्य अधिकारियों, पुलिस, शिक्षा अधिकारियों, समाज कल्याण विभागों, गैर सरकारी संगठनों, परामर्शदाताओं, स्कूलों और सामुदायिक प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए जिला स्तरीय बहु-क्षेत्रीय टास्क फोर्स की स्थापना करना होगा। यह सुनिश्चित करेगा कि समस्या को केवल कानून-व्यवस्था के दृष्टिकोण से न देखा जाए।

दूसरा, मैं संवेदनशील स्थानों और समूहों का साक्ष्य-आधारित मानचित्रण (mapping) शुरू करूंगा। अंधाधुंध पुलिस कार्रवाई के बजाय, हस्तक्षेपों को तस्करी नेटवर्क, उच्च जोखिम वाले स्थानों और संवेदनशील आबादी पर लक्षित किया जाएगा।

तीसरा, मैं नशामुक्ति और पुनर्वास सेवाओं तक पहुँच का विस्तार करूंगा। जहाँ संस्थागत सुविधाओं की कमी है, वहाँ मोबाइल परामर्श इकाइयाँ, स्कूल और कॉलेज परामर्श, रेफरल तंत्र और समुदाय-आधारित पुनर्वास शुरू किए जा सकते हैं।

चौथा, गोपनीयता और गरिमा की रक्षा की जानी चाहिए। सामाजिक कलंक के कारण परिवार अक्सर व्यसन को छिपाते हैं। एक दंडात्मक प्रशासनिक माहौल इस समस्या को और बदतर बना सकता है। इसलिए सार्वजनिक संचार में इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि उपचार की तलाश करना शर्म की बात नहीं बल्कि जिम्मेदारी का संकेत है।

पाँचवाँ, निवारक हस्तक्षेपों में खेल, व्यावसायिक प्रशिक्षण, युवा क्लब, मनोवैज्ञानिक परामर्श और सार्थक रोजगार के अवसर शामिल होने चाहिए। जब युवाओं के पास सामाजिक सहायता और उपलब्धि के लिए रचनात्मक रास्ते होते हैं तो व्यसन रोकथाम अधिक टिकाऊ हो जाती है।

तत्काल पुलिस कार्रवाई की राजनीतिक मांग को खारिज नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन प्रशासन को यह स्पष्ट करना चाहिए कि प्रवर्तन अंधाधुंध होने के बजाय केंद्रित और खुफिया-आधारित (intelligence-led) होगा। यह दृष्टिकोण सार्वजनिक व्यवस्था और सार्वजनिक स्वास्थ्य दोनों को एक साथ संबोधित करता है।

नैतिक ढाँचे को विभिन्न सिद्धांतों के माध्यम से समझा जा सकता है। उपयोगितावाद (Utilitarianism) उन उपायों का समर्थन करता है जो सबसे बड़ा समग्र सामाजिक लाभ उत्पन्न करते हैं। कर्तव्यशास्त्र (Deontological ethics) राजनीतिक दबाव की परवाह किए बिना कानून और गरिमा के पालन की मांग करता है। सद्गुण नीतिशास्त्र (Virtue ethics) प्रशासक से अनुकंपा, साहस, निष्पक्षता और विवेक की मांग करता है।

निष्कर्ष: एक नैतिक प्रशासक को न तो व्यसन का रोमैंटीकरण करना चाहिए और न ही व्यसनियों को कलंकित करना चाहिए। उपयुक्त दृष्टिकोण शोषण के खिलाफ सख्त, पीड़ितों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और संभावित उपयोगकर्ताओं के प्रति निवारक होना चाहिए।

समसामयिकी (Current Affairs) | विकसित भारत संकल्प अभियान के लिए नशा मुक्त युवा

प्रश्न 5. "नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ भारत की लड़ाई को मुख्य रूप से प्रवर्तन-उन्मुख ढाँचे से हटाकर रोकथाम, उपचार, पुनर्वास और सामाजिक पुनर्निवेश को जोड़ने वाले एक व्यापक मॉडल की ओर बढ़ना चाहिए।" विकसित भारत संकल्प अभियान के लिए नशा मुक्त युवा के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर: मादक द्रव्यों का सेवन एक बहुआयामी चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सार्वजनिक स्वास्थ्य, मानव पूंजी, सामाजिक स्थिरता, अपराध, पारिवारिक कल्याण और राष्ट्रीय सुरक्षा शामिल हैं। अगस्त 2026 में 'विकसित भारत संकल्प अभियान के लिए नशा मुक्त युवा' का शुभारंभ युवा-केंद्रित और रोकथाम-उन्मुख दृष्टिकोण की आवश्यकता पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करता है। यह अभियान सामाजिक कलंक के कारण व्यसन को छिपाए रखने के बजाय खुले संचार, जागरूकता, उपचार, पुनर्वास और सामुदायिक भागीदारी पर जोर देता है।

भारत का नशीली दवा रोधी ढाँचा मोटे तौर पर तीन पूरक आयामों को शामिल करता है।

पहला, **आपूर्ति में कमी (supply reduction)** नशीले पदार्थों और मनोप्रभावी पदार्थों की तस्करी और अवैध उपलब्धता को रोकने पर ध्यान केंद्रित करती है। स्वापक औषधि और मनःप्रभावी पदार्थ अधिनियम, 1985 (NDPS Act) मुख्य कानूनी ढांचा प्रदान करता है, जबकि प्रवर्तन एजेंसियां संगठित तस्करी नेटवर्क के खिलाफ काम करती हैं।

दूसरा, **मांग में कमी (demand reduction)** जागरूकता, परामर्श, उपचार और पुनर्वास के माध्यम से शुरुआत को रोकने और निर्भरता को कम करने का प्रयास करती है। नशीली दवाओं की मांग में कमी के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना और नशा मुक्त भारत अभियान इस दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण घटक हैं।

तीसरा, **हानि में कमी और पुनर्वास (harm reduction and rehabilitation)** यह स्वीकार करता है कि निर्भरता से पहले से प्रभावित लोगों को चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता होती है। पुनर्वास और सामाजिक पुनर्निवेश के बिना, पुनः व्यसन (relapse) हो सकता है और व्यक्ति निर्भरता, बेरोजगारी और सामाजिक बहिष्कार के दुष्चक्र में फंसा रह सकता है।

युवा-केंद्रित रणनीति विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि किशोरावस्था और प्रारंभिक वयस्कता मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और शैक्षणिक विकास के महत्वपूर्ण चरण हैं। इन वर्षों के दौरान मादक द्रव्यों का सेवन शैक्षणिक उपलब्धि, रोजगार क्षमता, पारिवारिक संबंधों और दीर्घकालिक मानव पूंजी को नुकसान पहुंचा सकता है। नतीजतन, नशीली दवाओं की रोकथाम को स्कूल परामर्श, खेल, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, व्यावसायिक शिक्षा और युवा भागीदारी के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए।

खुले संचार पर अभियान का जोर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। कलंक (stigma) अपने आप में एक नीतिगत बाधा है क्योंकि परिवार इलाज कराने के बजाय व्यसन को छिपा सकते हैं। सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव से प्रारंभिक हस्तक्षेप (early intervention) बढ़ सकता है।

हालांकि, केवल जागरूकता अभियान पर्याप्त नहीं हैं। उनकी प्रभावशीलता प्रशिक्षित परामर्शदाताओं, किफायती उपचार, पुनर्वास सुविधाओं, अनुवर्ती (follow-up) सेवाओं और समुदाय-आधारित सहायता की उपलब्धता पर निर्भर करती है। इसलिए जिला स्तरीय क्रियान्वयन को मजबूत किया जाना चाहिए।

भारत को एक संपूर्ण-सरकार और संपूर्ण-समाज दृष्टिकोण (whole-of-government and whole-of-society approach) अपनाना चाहिए जिसमें सामाजिक न्याय और अधिकारिता, स्वास्थ्य, गृह, शिक्षा और युवा मामले मंत्रालयों के साथ-साथ राज्य, स्थानीय सरकारें, स्कूल, परिवार, नागरिक समाज और स्वास्थ्य सेवा संस्थान शामिल हों।

निष्कर्ष: एक नशा मुक्त भारत केवल जब्ती और गिरफ्तारियों के माध्यम से हासिल नहीं किया जा सकता है। दीर्घकालिक उद्देश्य शुरुआत को रोकना, निर्भरता की पहचान जल्दी करना, उपचार प्रदान करना, प्रभावित व्यक्तियों का पुनर्वास करना और उन्हें उत्पादक सामाजिक और आर्थिक जीवन में फिर से एकीकृत करना होना चाहिए। युवाओं को व्यसन से बचाना अंततः भारत के जनसांख्यिकी लाभांश (demographic dividend) और विकसित भारत के व्यापक लक्ष्य में एक निवेश है।

आगे का रास्ता (Way Forward):

जिला स्तरीय नशामुक्ति के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, शैक्षणिक संस्थानों में व्यवस्थित परामर्श की शुरुआत करना, युवा नेतृत्व वाले जागरूकता कार्यक्रमों का विस्तार करना, पुनर्वास और रोजगार सहायता में सुधार करना, साक्ष्य-आधारित रोकथाम रणनीतियों का उपयोग करना और व्यसन सेवाओं को व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के साथ एकीकृत करना।

